B.A (H) Philosophy Paper V Part III
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama

(1)

ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में तात्विक युक्ति

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए धर्म दर्शन में कई प्रमाण दिये गये है उनमें तात्विक युक्ति (Ontological Argument) भी एक है। इस युक्ति का सबसे पहले प्रयोग मध्ययुग में एन्सेलम नामक दार्शनिक ने किया था। एन्सेलम का कहना है कि ईश्वर की भावना सभी प्रत्ययों में सर्वोच्च है। वह जिसका अस्तित्व विचार और वास्तविकता दोनों में हो उस सत्ता की अपेक्षा उच्चतर है जिसका अस्तित्व केवल विचार में हो। इसप्रकार एन्सेलम के अनुसार ईश्वर सर्वोच्च होने के कारण विचार और वास्तविकता दोनों में है इसलिए ईश्वर यथार्थ में परम सत्ता है। आधुनिक युग में पाश्चात्य दार्शनिक देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए इस युक्ति का प्रयोग किया है। देकार्त के अनुसार ईश्वर के विषय में ज्ञान मात्र से ही उसकी सत्ता सिद्ध होती है। जिसप्रकार त्रिभुज के ज्ञान में ही यह ज्ञान भी नीहित है कि उसके तीनों कोण मिलकर दो समकोण के बराबर होते हैं ठीक उसीप्रकार ईश्वर की पूर्णता में यह भी नीहित है कि उसका अपना अस्तित्व है। देकार्त ने इस युक्ति को दूसरे रूप में भी प्रकट किया है।

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA

प्रो० राइट ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि - धर्मदर्शन, धर्म को समझना तथा धर्म के व्यवहारों एवं विश्वासों को मूल विशेषताओं का सम्पूर्ण जगत की दृष्टि से विवेचन करता है तथा धर्म का सम्बन्ध तत्व से निश्चित करता है।

प्रो० निकोलसन ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि धर्मदर्शन का उद्देश्य धार्मिक विश्वासों का अन्य मौलिक विश्वासों के साथ जो मानव जीवन को संचालित करते हैं, संयोजन स्थापित करना है।

प्रो० डी० एम० एडवर्ड ने धर्मदर्शन की परिभाषा देते हुए कहा है कि - धर्मदर्शन धार्मिक अनुभूति के स्वरूप, व्यापार, मूल्य तथा सत्यता की दार्शनिक खोज है। ईश्वर के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति विशेष की जो अनुभूति होती है, उसे धार्मिक अनुभूति कहा जाता है।

धर्मदर्शन, अर्घविज्ञान (Axiology) की शाखा है। अर्घविज्ञान में मूल्यों का सामान्य अध्ययन होता है। धर्मदर्शन को अर्घविज्ञान की शाखा इसलिये कहा जाता है कि

के अस्तित्व को प्रमाणित किया है। लाइबनिज ने अपने Monadology में बतलाया है कि प्रत्येक Monad के दो पक्ष है - वास्तविकता और संभाव्यित, सक्रियता और निष्क्रियता। जो monad जितने उच्चतर होंगे उनमें उतनी अधिक सक्रियता और वास्तविकता होगी। इसके ठीक विपरीत जो Monad जितने निम्नस्तर के होंगे उनमें उसी मात्रा में निष्क्रियता होगी। लाइबनीज का कहना है कि चूंकि ईश्वर सोपानक्रम में सर्वोच्च Monad है इसलिए उसके अन्दर सभी निष्क्रियता और संभावना वास्तविक हो गई है जिससे यह प्रमाणित होता है कि ईश्वर पूर्णतया वास्तविक है। प्रसिद्ध दार्शनिक हीगेल ने भी इस युक्ति के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने की कोशिश की है। हीगेल का कहना है कि ईश्वर का प्रत्यय एक असाधारण तथा अनोखा प्रत्यय है। हीगेल ने बतलाया है कि चूंकि ईश्वर का प्रत्यय अनूठा प्रत्यय है इसलिए ईश्वरीय विचार से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

तार्किक युक्ति की आलोचना :- जर्मन दार्शनिक कान्ट ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि ईश्वर

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA

की पूर्णता के विचार से केवल ईश्वर के विचार की सत्ता प्रमाणित होती है, ईश्वर की सत्ता सिद्ध नहीं होती है। काण्ट का कहना है कि केवल विचार से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति केवल सोच ले कि हमारे पाकेट में पाँच सौ रुपये हैं तो केवल सोच लेने से पाँच सौ रुपये पाकेट में नहीं आ जायेंगे। हीगेल ने काण्ट के विचार का खण्डन करते हुए कहा है कि काण्ट का विचार साधारण वस्तुओं के संबंध में सही माना जा सकता है परन्तु ईश्वर के ऊपर इसे लागू नहीं किया जा सकता है क्योंकि ईश्वर एक पूर्ण और अनंत सत्ता है।

नास्तिक युक्ति की आलोचना करते हुए गेलवे ने कहा है कि यह युक्ति हमारी धार्मिक भावना के विकास में असंगत है क्योंकि धर्म में उपासक एक ऐसे ईश्वर की अपेक्षा रखता है जो उसकी उपासना का जवाब दे सके और ईश्वर हमारी उपासना का जवाब नहीं दे सकता है जब वह हमसे निकट हो। राइट नामक दार्शनिक का कहना है कि नास्तिक युक्ति एक ऐसे ईश्वर की ओर संकेत करती है जो असीम एवं पूर्ण है। इसके कारण ससीम भावना उस ईश्वर तक नहीं पहुँच पाती है और ऐसी स्थिति में हमारी धार्मिक भावना की संतुष्टि नहीं हो पाती है।

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA